12

कोरोना/कोविड-19 में मानवीय मूल्यों के ह्रास के कारण एवं निदान में शिक्षक की भूमिका एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

अमित अग्रवाल*

अभिषेक कुमार सिंह**

मनुष्य में काम, क्रोध, मोह, लोभ, माया, तृष्णा, घृणा, प्रेम, भक्ति, धैर्य, विवेक, आनंद, शोक, मद, ईर्ष्या, निंदा, असूया, आत्म नियंत्रण, अनुशासन, निष्ठा, क्षमा, सहानुभूति, दृढ़ता, स्थिरता, निर्भरता, करुणा आदि अनेकों तत्वों का समावेश होता है। इन्हीं सब गुणों के कारण मनुष्य को किसी भी अन्य जीव-जंतु से श्रेष्ठ माना गया है। मानवीय मूल्यों का किसी भी व्यक्ति के लिए अत्यधिक महत्व होता है और ऐसा इसलिए, क्योंकि कोई भी व्यक्ति अपने व्यवहार स्वभाव के द्वारा समाज में रहने वाले समग्र व्यवहार का निर्धारण करता है। मनुष्य पृथ्वी पर रहने वाले अन्य प्राणियों के समान ही इस पृथ्वी का एक सदस्य है जो कि अनंत काल से अन्य जीव-जंतुओं के साथ सामंजस्य बनाकर रहता आ रहा है। मनुष्य के अतिरिक्त अन्य प्राणी मात्र अपने शरीर तक ही सीमित रहते हैं अर्थात उनके लिए शरीर की सीमा का अतिक्रमण करना संभव नहीं होता, लेकिन मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जो केवल चेतन जीवित सत्ता ही नहीं है, बल्कि एक आत्म चेतन सत्ता भी है। मनुष्य की चेतना न केवल बहिर्गामी, बल्कि वह अंतर्मुखी भी है। कोई भी व्यक्ति अपने जीवन में जो निर्णय लेता है वे केवल एक व्यक्ति विशेष को ही प्रभावित नहीं करते, बल्कि हमारे परिवार, संगठन, समाज के साथ-साथ हमारे राष्ट्र को भी प्रभावित करते हैं। जिस प्रकार आज के समय में मानवीय मूल्यों में दिन-प्रतिदिन कमी होती जा रही है और उन कमियों के कारकों के ऊपर क्रमबद्ध तरीके से मानवीय मूल्यों की कमियों को दूर करके उनमें सुधार किया जा सकता है और ये सुधार एक शिक्षक के माध्यम से किसी भी मनुष्य के संपूर्ण विकास में योगदान दे सकते हैं। प्रस्तुत लेख में मानवीय मूल्यों के ह्रास के कारणों का समाज पर पड़ने वाले प्रभाव और उनके निदान का अध्ययन किया गया है। समाज में फैली विकृतियों को मानवीय मूल्यों, आदर्शों व संवेदनशीलता से जोड़ना होगा। संवेदनशील व उदार शिक्षक वर्तमान परिदृश्य को बदलने में सक्षम होते हैं। शिक्षा के माध्यम से समाज में सेवा, समर्पण, सामंजस्य, समन्वय, सद्भाव व त्याग की भावनाएँ विकसित होनी चाहिए। शिक्षा को सुदृढ़ बनाने में शिक्षकों की सक्रिय भागीदारी व सद्भावना महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

---

*सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य), राजकीय महाविद्यालय, रजानगर (रामपुर)

** सहायक प्राध्यापक, रामानुजन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

'मूल्य' शब्द जिसे अंग्रेजी भाषा में 'वेल्यू' कहा जाता है, मूल धातु से उत्पन्न हुआ है जिसका अर्थ जड़ या स्त्रोत होता है। ज्ञान या इससे संबंधित अन्य संदर्भों में जब हम केवल सतही दृष्टि तक सीमित न रहते हुए समस्या की तह, जड़ तक जाने का प्रयास करते हैं तो वह न केवल कठिन, बल्कि प्रतिफल युक्त भी होता है। नीतिशास्त्र जिसे अंग्रेजी में 'एथिक्स' कहते हैं की उत्पत्ति ग्रीक भाषा के एथिकास शब्द से हुई है जिसका अर्थ कालजयी परंपरा है। यदि हम दूसरे शब्दों में कहें तो नीतिशास्त्र या एथिक्स उस परंपरा को जानना चाहता है जो देश काल की सीमाओं का अतिक्रमण करता है। संस्कृत भाषा का शब्द स्वधर्मआत्मा या सत्ता से जुड़ा है। मानवीय मूल्यों से अभिप्राय किसी व्यक्ति के भौतिक अथवा मानसिक अवस्था के उस गुण से है, जिसके द्वारा मनुष्य के किसी उद्देश्य अथवा लक्ष्य की पूर्ति होती है।

शोध के उद्देश्य

1. मानवीय मूल्यों से अवगत कराना एवं मानवीय मूल्यों में ह्रास के कारणों से अवगत कराना।
2. मानवीय मूल्यों में ह्रास को रोकने के उपायों से अवगत कराना।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोधपत्र के लिए मानवीय मूल्यों के अध्ययन करने हेतु प्राथमिक समंकों का प्रयोग किया गया है। सामाजिक कार्यकर्ता, शिक्षक, पेशेवर व्यक्ति, जैसे— वकील, आदि 200 उत्तरदाताओं से अनुसूचियों एवं प्रश्नावलियों के माध्यम से प्राथमिक समंक एकत्र किए गए हैं। प्रश्नावलियों/अनुसूचियों से प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। सहायक आँकड़ों के आधार पर मानवीय मूल्यों का अध्ययन प्रस्तुत पत्र में किया गया है। साहित्य पूर्वालोकन एवं आँकड़ें द्वितीय संमकों से एकत्र किए गए हैं। कंप्यूटर प्रोग्राम/एम.एस. एक्सेल की सहायता से आँकड़ों का विश्लेषण किया गया है।

नरेंद्र चौधरी (*कुलपति*, उत्तराखंड तकनीकी विश्वविद्यालय) ने कहा कि पिछले सात दशकों में हमारे देश में शिक्षा का विस्तार तो हुआ, मगर शिक्षा में मानवीय संवेदना जो हमारे धरोहर की गुरुकुल पद्धति में मौजूद थी। आज की शिक्षा में खत्म सी हो गई है। अब लागू होने जा रही राष्ट्रीय शिक्षा नीति स्वामी विवेकानंद द्वारा कथित 'शिक्षा का मूल उद्देश्य मानव के अंदर व्याप्त सुप्त शक्ति का प्रकटीकरण है,' को समाए हुए है।

राजेश बहुगुणा (*कार्यकारी कुलपति*, उत्तरांचल विश्वविद्यालय, देहरादून) का कहना है कि कोई व्यक्ति कितना भी बुद्धिमान क्यों न हो, परंतु उसकी दूरदृष्टि की एक सीमा होती है। माता-पिता के बाद गुरू को ही सबसे ऊपर माना गया है। गुरू अर्थात शिक्षक उस कुम्हार के समान है जो मिट्टी रूपी विद्यार्थी को एक बरतन का आकार देकर एक योग्य व उपयोगी पात्र बना देता है।

गुरू किसी भी छात्र को शिक्षा देकर एक बेहतर मनुष्य बना देता है। नैतिक मूल्यों की जो शिक्षा वह विद्यार्थी को देगा उसका प्रभाव विद्यार्थी पर जीवनपर्यंत बना रहेगा। यहीं से उसके चरित्र निर्माण की प्रक्रिया आरंभ होगी। अतः नैतिक मूल्यों के उत्थान में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

एक शिक्षक ही विद्यार्थी को समाज के प्रति उसके उत्तरदायित्वों से रूबरू कराता है। एक शिक्षक का मुख्य काम यह है कि वह अपने विद्यार्थी को वर्तमान और भविष्य को ध्यान में रखकर शिक्षा दे। शिक्षा में परंपरा और नवीनता का मिश्रण होना चाहिए। वह विद्यार्थी को केवल किताबी ज्ञान तक ही सीमित न रखे, बल्कि उसे जीवन के व्यावहारिक ज्ञान की भी शिक्षा दे। मूल्य शिक्षा छात्रों को जीवन के बारे में सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदान करती है और उन्हें एक अच्छा इंसान बनने के लिए प्रेरित करती है, उन लोगों की मदद करती है, उनके समुदाय का सम्मान करने के साथ-साथ अधिक जिम्मेदार और समझदार बनाती है। विद्यार्थी तो एक गीली मिट्टी के समान होता है, शिक्षक उसे जैसा ढालेगा वैसा ढल जाएगा। यहाँ पर शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। अतः नैतिक मूल्यों के उत्थान में शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

शिक्षण संस्थान दो स्तरों पर मूल्य विकास में योगदान देते हैं— आधारभूत शिक्षा के स्तर पर व उच्च शिक्षा के स्तर पर। आधारभूत स्तर पर मूल्यों का प्रभाव ज्यादा होता है, जबकि उच्च शिक्षण संस्थान प्रायोगिक मूल्यों का विकास कर पाते हैं। व्यक्तित्व परिवर्तन की संभावना उच्च स्तर पर ज्यादा होती है। विभिन्न विचारधाराओं के संपर्क में आने का क्रम भी उच्च शिक्षण संस्थानों से ही शुरू होता है। विभिन्न पाठ्यक्रमों द्वारा स्वतंत्रता, समानता, अहिंसा, नैतिक शिक्षा का प्रभाव भी मूल्य विकास में सहायक होता है। इस प्रक्रिया में अध्यापक और छात्र समूह भी अहम योगदान देते हैं।

कोरोना काल में मूल्य ह्रास के निवारण में शिक्षक की भूमिका में ह्रास के कारण

कोरोना/कोविड-19 के कारण भारत और शेष विश्व में शैक्षणिक संस्थान और विश्वविद्यालय बंद कर दिए गए। जैसे-जैसे छात्र अपने घरों में, महामारी जन्य आइसोलेशन में कैद होते गए, वे अपने मित्रों और शिक्षकों से दूर होते गए। साथ ही महामारी में आने वाली बुरी खबरों का असर जो घर के बड़ों पर पड़ा, उनके तनाव से भी बच्चों और किशोरों के मन मस्तिष्क पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। घर के जबरिया थोपे गए एकांत और हमउम्र मित्रों के अभाव के कारण उपजी संवादहीनता ने बच्चों के सीखने की क्षमता और स्वाभाविक जिज्ञासु भाव को बहुत अधिक प्रभावित किया है। शिक्षक और शिक्षार्थियों के मध्य संपर्क का माध्यम ऑनलाइन हो गया है। शिक्षण क्षेत्र में नई-नई विधाओं का उदय हुआ जिससे मानवीय संबंधों में व्यापक परिवर्तन आ गया है। नए-नए मानवीय मूल्यों की उत्पत्ति हुई। महामारी के दौरान नई सामाजिक एवं कार्य संस्कृति विकसित हुई। ऑफलाइन शिक्षण की तुलना में ऑनलाइन शिक्षण में मूल्यों के विकास में शिक्षक की भूमिका तुलनात्मक रूप से कम है।

सारणी 1— कोरोना काल में मूल्य ह्रास के निवारण में शिक्षक की भूमिका में ह्रास के कारण

क्र. सं.	शिक्षक की भूमिका में ह्रास के कारण	न्यूनतम (उत्तरदाताओं की सहमति का %) अधिकतम→
क	शिक्षक-शिक्षार्थी का प्रत्यक्ष संपर्क न होना	

ख	विवेक एवं ज्ञान निर्माण की निगरानी में कमी	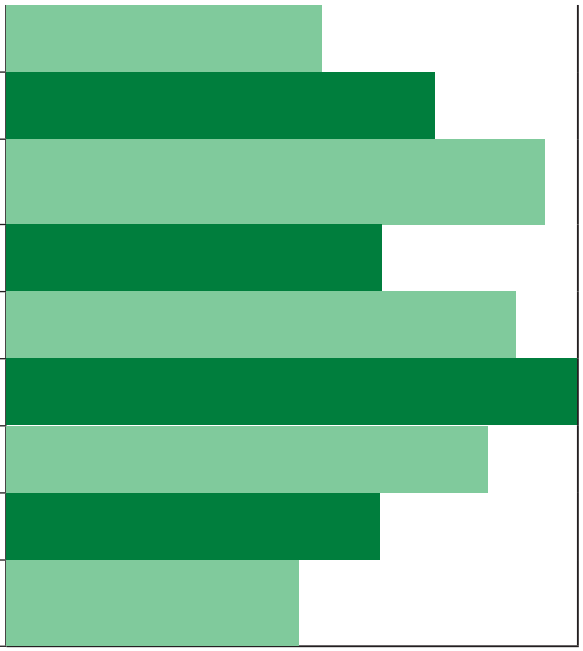
ग	मूल्य एवं व्यवहार परिमार्जन के समय में कमी	
घ	मूल्य निर्माण की विभिन्न विधियों का प्रयोग न होना	
ङ	वातावरण में अंतःक्रिया न हो पाना	
च	चिंतन की प्रक्रिया बाधित होना	
छ	सर्वांगीण विकास की क्रियाएँ न हो पाना	
ज	तनाव निवारण न हो पाना	
झ	समूह/सांस्कृतिक गतिविधियों का अभाव	
ञ	अनुशासित वातावरण में व्यवहार असंशोधित रहना	

स्त्रोत— स्वतः सर्वेक्षण

मानवीय मूल्यों के ह्रास के निदान एवं निवारण में शिक्षक की भूमिका

शिक्षा की एक बहुत बड़ी भूमिका यह भी है कि वह अपनी संस्कृति, धर्म तथा अपने इतिहास को अक्षुण्ण बनाए रखें, जिससे कि राष्ट्र का गौरवशाली अतीत भावी पीढ़ी के समक्ष द्योतित हो सके और युवा पीढ़ी अपने अतीत से कटकर न रह जाए। किसी भी देश व दुनिया, क्षेत्र, समाज, परिवार, का विकास व प्रगति मूल्यों पर टिकी होती है। मूल्यों का आधार जितना मजबूत होगा उसका परिणाम उतना ही सुखद होता है। आज दुनिया जिन समस्याओं से जूझ रही है, उसका मुख्य कारण है मूल्यों का ह्रास होना। मूल्यों का ह्रास होना मानवता के लिए सर्वाधिक घातक है, क्योंकि सदाचार, संस्कार, नैतिक आचरण, सत्यनिष्ठा विहीन जीवन सदैव विनाशकारी ही होता है। जब स्वतःसत्ता स्थापित करने की होड़ में मनुष्य चला है व मूल्यों को दाँव पर लगाकर मात्र सुख-सुविधाओं को पाने, तब वह केवल पतन की ओर ही अग्रसर हुआ है। जो भी कर्म मूल्यों के विरुद्ध होते हैं वह मनुष्य को कुछ समय लाभ अवश्य दे सकते हैं, किंतु अंतत: उनका परिणाम विनाशकारी व पतनगामी ही होता है।

एक शिक्षक को यदि किसी देश समाज का निर्माता कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी, क्योंकि शिक्षक ही वह धुरी है जो किसी समाज, देश में रहने वाले व्यक्तियों में चारित्रिक निर्माण कर उनमें मानवीय मूल्यों, गुणों की नींव का निर्माण करता है। भारत, जैसे— विविध भाषा, धर्म, जाति, रीति-रिवाज और संस्कृति वाले राष्ट्र में मूल्यों का मापन एक जटिल

प्रक्रिया है। सार्वभौमिक पैमाना तैयार करना दुधारू कार्य है। एक मनुष्य के अंदर समय-समय पर मूल्य बदलते रहते हैं।

मानवीय मूल्यों के ह्रास के निदान एवं निवारण में एक शिक्षक की भूमिका को निम्न तालिका की सहायता से क्रमबद्ध किया जा सकता है—

सारणी 2— मानवीय मूल्यों के ह्रास के निदान एवं निवारण में शिक्षक की भूमिका

क्र. सं.	मानवीय मूल्य के निदान एवं निवारण में शिक्षक की भूमिका	रैंक या श्रेणी
क	नैतिकता को बनाने में	1
ख	चारित्रिक निर्माण करने में	2
ग	विवेक एवं ज्ञान के निर्माण करने में	3
घ	आध्यात्मिक क्षेत्र के निर्माण में योगदान	4
ङ	सामाजिक निर्माण में योगदान	5
च	आत्म-नियंत्रण के निर्माण में योगदान	6
छ	सांस्कृतिक निर्माण में योगदान	7
ज	अनुभव चिंतन, मनन, तनाव निवारण में योगदान	8
झ	कौशल विकास, तकनीकी विकास में योगदान	9
ञ	शिष्टाचार, योगाभ्यास, खेलकूद आदि द्वारा मूल्य निर्माण	10

स्त्रोत— स्वतः सर्वेक्षण

किसी देश के राष्ट्र निर्माण में शिक्षक एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। व्यक्ति अपने बाल्यकाल से लेकर युवावस्था तक शिक्षक से शिक्षा ग्रहण करता है। इसलिए एक शिक्षक का अनेक शिष्यों से घनिष्ठ संबंध रहता है। इसलिए भी एक शिक्षक का व्यक्तित्व मानव को या शिष्य को किसी न किसी रूप में प्रभावित करता है, क्योंकि एक शिक्षक स्वंय समाज के लिए आदर्श होता है। अतः उसके द्वारा उसका अनुसरण करके मानवीय मूल्यों को बढ़ाया जा सकता है। सारणी 2 का अध्ययन करने से पता चलता है कि उत्तरदाताओं द्वारा नैतिकता को मानवीय मूल्यों के निवारण हेतु प्रथम कारक माना गया है। एक शिक्षक मानव में नैतिक गुणों का विकास करने में योगदान देता है। वह उसमें सदाचार, प्रेम, भावना, सहायताप्रद, सच्चाई, नियमों का पालन करने, दूसरे की सहायता करने समाज के विकास में योगदान देने जैसी मुख्य बातों का विकास करने में सहायता प्रदान करता है। एक शिक्षक का द्वितीय कार्य मानव में चारित्रिक गुणों का विकास करना है जब तक मनुष्य में चरित्र का निर्माण नहीं होगा उससे किसी भी कार्य में ईमानदारी से भागिता लेकर कार्य कराना संभव नहीं होगा। कहा भी गया है कि, यदि धन खो जाए तो कोई दुःख नहीं है यदि स्वास्थ्य खो जाए तो कुछ हानि समझनी चाहिए और यदि चरित्र खो जाए तो सब कुछ नष्ट समझना चाहिए। तीसरे पायदान पर विवेक एवं ज्ञान को स्थान दिया गया है। ज्ञान के द्वारा ही कठिन से कठिन समस्या को हल किया जा सकता है। एक शिक्षक अपनी शिक्षा से किसी भी मनुष्य को आध्यात्मिक क्षेत्र में लगा सकता है अर्थात जब मनुष्य अपनी भौतिक आवश्यकताओं को पूरा कर लेता है तो उसके बाद वह एक कुशल शिक्षक के सान्निध्य में रहकर अध्यात्म की ओर अग्रसर हो सकता है। एक शिक्षक द्वारा किसी भी व्यक्ति (शिष्य) में सामाजिक मूल्यों का विकास करने में महत्ती भूमिका निभाई जा सकती है। एक व्यक्ति के अपना विकास करने के साथ-साथ समाज के विकास

के प्रति भी कुछ उत्तरदायित्व होते हैं। अतः एक शिक्षक समाज में रहने वाले व्यक्तियों में सामाजिक मूल्य को पैदा करने में योगदान देता है। आत्म-नियंत्रण वह अवस्था है जिसमें व्यक्ति का अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण हो जाता है। अतः जब कोई मनुष्य लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, चोरी आदि कुरीतियों को अपने ऊपर हावी नहीं होने देता और कोई भी अनुचित काम नहीं करता है तो वह आत्म-नियंत्रण की अवस्था को प्राप्त कर लेता है। संस्कृति प्रत्येक मनुष्य के जीवन से जुड़ी हुई है यहाँ पर किसी भी प्रकार का कोई भी आभूषण नहीं है जिसे मनुष्य प्रयोग कर सके। संस्कृति तो वह गुण है जो हमें मनुष्य बनाता है। संस्कृति के बिना तो मानव जीवन का इस धरा पर रहना ही संभव नहीं होगा। संस्कृति परंपराओं से, विश्वासों से, जीवन की शैली से, आध्यात्मिक पक्ष से, भौतिक पक्ष से निरंतर जुड़ी हुई है। मानव ही संस्कृति का निर्माता है और साथ ही संस्कृति मानव को बनाती है। ऐसे में एक शिक्षक द्वारा मानवीय मूल्यों का विकास किया जाना स्वाभाविक-सी बात है। आठवें स्थान पर अनुभव चिंतन, मनन एवं तनाव के निवारण करने में एक शिक्षक के योगदान को बताया गया है। एक शिक्षक अपने अनुभव से समाज में रहने वाले व्यक्तियों में उनकी जिज्ञासाओं को शांत करके, उन्हें तर्क-वितर्क के जंजाल से निकालकर, तनाव मुक्ति का सूत्र पकड़ा कर चहुँमुखी विकास करने में अपना योगदान देता है। नौंवी श्रेणी का स्थान एक शिक्षक द्वारा मानव को कौशल विकास एवं तकनीकी विकास के क्षेत्र में पारंगत कर उनकी कुशलता का भरपूर फायदा उठाने के लिए प्रेरित किया जाना है। मानव नई-नई तकनीकें सीखकर रोजगार के साधनों को अपनाकर अपना व अपने समाज व देश के विकास में योगदान करता है। सबसे अंतिम बिंदु के अनुसार शिष्टाचार, योगाभ्यास और खेलकूद के द्वारा एक शिक्षक समाज में रहने वाले व्यक्तियों में शालीनता शिष्टाचार, प्रेम का भाव पैदा करने में अपना योगदान देता है। वह मनुष्य को बुद्धि से ही नहीं, बल्कि शारीरिक रूप से भी हृष्ट-पुष्ट बनाने में योगदान देता है। वह उन्हें नित्य ही योगाभ्यास करने के लिए प्रेरित करता है, ताकि पूरे दिन शरीर में सही उर्जा का संचार हो सके। शाम के समय खेलकूद के लिए प्रेरित करता है, ताकि शरीर मजबूत बना रहे, रोग प्रतिरोधक शक्ति बनी रहे। अपने परिवार समाज के लिए एक रक्षक की तरह अपना योगदान दे सके। अतः सारणी 2 का अध्ययन करने के पश्चात यही कहा जा सकता है कि एक शिक्षक किसी भी समाज में रहने वाले लोगों में मानवीय मूल्य के निर्माण करने में अपनी भूमिका निभाता है और शिक्षक की सहभागिता के द्वारा मानवीय मूल्यों के ह्रास के निदान में सहायता भी प्राप्त की जा सकती है।

निष्कर्ष

प्राचीन काल से लेकर वर्तमान कालक्रम तक मानव के विकास की अवस्थाओं में अनेक परिवर्तन आए हैं और इन्हीं कालक्रमों के परिवर्तनों के कारण समय पर मानव में विभिन्न मूल्यों (गुणों) की उपस्थिति एवं अनुपस्थिति पाई जाती है। मानव इस सृष्टि की अद्‌भुत रचना है जो ईश्वर ने बनाई है इसलिए उसमें सामाजिकता, नैतिकता, राजनैतिकता, मद, लोभ, ईर्ष्या, घृणा, प्रेम शक्ति, ज्ञान, विवेक, शील, अच्छे,

बुरे सभी गुणों का समावेश है। एक समय विशेष पर जब किसी एक पक्ष की अधिकता हो जाती है तो व्यक्ति उसी के अनुरूप अपना आचरण, व्यवहार करने लग जाता है। नैतिक मूल्यों के द्वारा मानव अपने व्यवहार तथा कार्यों को नियंत्रित करता है। नैतिक मूल्यों का किसी भी समाज की उन्नति तथा पतन में महत्वपूर्ण स्थान होता है। प्रस्तुत शोधपत्र में मानवीय मूल्यों के ह्रास के कारणों को एक सूचीबद्ध सारणी के माध्यम से रैंक या श्रेणी के आधार पर वर्णित किया गया है जो कि समाज में रहने वाले विभिन्न व्यक्तियों से उनके दिए गए निष्कर्ष के आधार पर निकाले गए हैं जो किसी भी समाज विशेष में रहने वाले व्यक्तियों पर स्टीक बैठते हैं, क्योंकि आज के भागमभाग समय में इन कारकों की अधिकता पाई जाती है। इस शोधपत्र के माध्यम से मानवीय मूल्यों के ह्रास के कारणों का निवारण भी किया जा सकता है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने भारतीय कालातीत उच्च श्रेष्ठ मूल्यों को जन साधारण के जीवन में प्रस्थापित करने के उद्देश्य से ही शांति निकेतन जैसी शिक्षण संस्था की स्थापना की और इसके लिए उन्होंने प्रतिभाशाली तथा आदर्शवादी व्यक्तियों की मदद ली और स्वयं उन्हें उचित कार्य करने के लिए प्रेरित किया। महामारी के दौरान शिक्षकों ने शिक्षार्थियों के साथ ऑनलाइन शैक्षणिक गतिविधियाँ संपन्न की। शिक्षकों ने शिक्षार्थियों के समूह में मानवीय मूल्यों का विकास किया। शिक्षार्थियों के समूह में परस्पर अंत:क्रिया के द्वारा शिक्षार्थियों के मानसिक तनाव में कमी आई। अब महामारी के दौरान उत्पन्न स्थिति में परिवर्तन आने लगा है जिसमें शिक्षक की भूमिका पुन: अत्यधिक महत्वपूर्ण हो गई है।

संदर्भ

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय. 2021. *मानवीय मूल्य और विचार*. उत्तराखंड.

———. *शिक्षा और मानव विकास*. उत्तराखंड.

एडिलेड घोषणा. 1999. http://www.curriculum.edu.au/mceetya/nationalgoals/natgoals.html

कुमार, प्रदीप और रमन चरला. 2013. *ह्यूमन वैल्यूज एंड प्रोफेशनल एथिक्स*. पैरामाउंट पब्लिशिंग हाउस, हैदराबाद.

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड. 2003. *मूल्य शिक्षा, शिक्षकों के लिए एक पुस्तिका*. सी.बी.एस.ई. नई दिल्ली.

गुप्ता, महावीर प्रसाद. 2017. *फिलॉस्फर एंड सोशल फाउंडेशन ऑफ एजुकेशन*. मॉडर्न पब्लिशर्स, जालंधर.

टंडन, एस. 2016. *टीचर्स इन द मेकिंग*. क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली.

डेस्ट. 2003. *मूल्य शिक्षा अध्ययन*. पाठ्यचर्या निगम, मेलबर्न.

———. 2005. *ऑस्ट्रेलियाई स्कूलों में मूल्यों की शिक्षा के लिए राष्ट्रीय ढांचा*. शिक्षा, विज्ञान और प्रशिक्षण विभाग, कैनबरा.

नॉर्मन, आर. 1998. *द मोरल फिलॉसफी— एन इंट्रोडक्शन टू एथिक्स*. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, ऑक्सफोर्ड.

पांडे, एम.एम. 2004. शिक्षा विभाग, आर.आई.ई. (रा.शै.अ.प्र.प.), अजमेर.

वाल्श, एन. 2004. *कल का ईश्वर : हमारी सबसे बड़ी आध्यात्मिक चुनौती*. होडर एंड स्टॉटन लिमिटेड, लंदन.

www.sssieducare.org/valueeducation

शाह, पी.के. 2017. गांधीजी के विचार बेसिक एजुकेशन एंड इट्स रेलेवेंस. *पुणे रिसर्च एन इंटरनेशनल जर्नल इन इंग्लिश*. वॉल्यूम 3, अंक 4.

हिरिनयाना, एम. 1975. *इंडियन कॉन्सेप्शन ऑफ वैल्यूज*. कवल्या पब्लिशर्स, मैसूर.

हैबरमास, जे. 1990. *नैतिक चेतना और संचार क्रिया*. (अनुवाद-सी. लेनहार्ड्ट और एस. निकोलसन). एम.ए.एस.एस. मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टैक्नोलॉजी प्रेस, कैम्ब्रिज.

त्रिपाठी, ए.एन. 2008. *ह्यूमन वैल्यूज*. न्यू एज इंटरनेशनल (पी.) लिमिटेड, नई दिल्ली.